



## ऋग्वेद मण्डल-6

ऋग्वेद मन्त्र 6.16.1

Rigveda 6.16.1

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।

देवेभिर्मानुषे जने॥

(त्वम्) आप (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (यज्ञानाम्) यज्ञ कार्यो अर्थात् कल्याण कार्यो के लिए (होता) समस्त वस्तुओं और परमात्मा के ज्ञान को लाने वाला और उपलब्ध कराने वाला (विश्वेषाम्) सबका (हितः) कल्याण, विकास के लिए स्थापित (देवेभिः) दिव्य लोगों के द्वारा (मानुषे जने) जन्म लेने वालों के बीच, मननशील मनुष्य।

नोट : यह मन्त्र सामवेद 2 के समान है।

व्याख्या :-

हमारे जीवन में यज्ञों को कौन स्थापित करता है?

‘अग्ने’, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप समस्त पदार्थों, परमात्मा के ज्ञान और योग्यताओं को लाने वाले और उपलब्ध करवाने वाले हो। आप उत्पन्न हुए तथा मननशील मनुष्यों के बीच दिव्य शक्तियों के द्वारा सबके कल्याण एवं विकास के लिए स्थापित हो।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन में दिव्य कैसे बना जा सकता है?

केवल दिव्य आत्माएँ ही एक पूर्ण याज्ञिक जीवन को समझती हैं और उसका अनुसरण करती हैं। उन्हें यह विश्वास होता है कि केवल पूर्ण त्याग ही हमें अहंकाररहित और इच्छारहित बना सकता है और दूसरी दिशा से – एक पूर्ण अहंकाररहित और इच्छारहित व्यक्ति ही केवल पूर्ण यज्ञ को कर सकता है। यदि कोई व्यक्ति पूरी तरह से अहंकाररहित और इच्छारहित नहीं बनता तो सभी अच्छे कार्य, मानवीय वृत्तियाँ और यहाँ तक कि परमात्मा के ज्ञान को प्राप्त करने का मार्ग भी दिव्य लक्ष्य से एक कदम दूर ही होगा। अहंकाररहित होने का अर्थ उक्त विश्वास के साथ जीना है कि सभी पदार्थों, ज्ञान और योग्यताओं को देने वाला परमात्मा ही है, अतः, वही वास्तविक कर्त्ता है। दिव्यता उस परमात्मा की सर्वोच्चता की अनुभूति में है न कि अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए किसी भी दावे को सिद्ध करना, क्योंकि वह पूरी तरह से जानता है कि प्रत्येक जीव को किस प्रकार से पालित-पोषित करना है।

सूक्ति :-

(त्वम् अग्ने यज्ञानाम् होता)

‘अग्ने’, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप समस्त पदार्थों, परमात्मा के ज्ञान और योग्यताओं को लाने वाले और उपलब्ध करवाने वाले हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



**ऋग्वेद मन्त्र 6.16.13**

**Rigveda 6.16.13**

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत ।

मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥

(त्वाम्) आपको (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (पुष्करात् अधि) आकाश में, हृदय में (अथर्वा) परमात्मा, शुद्धात्मा, दृढ़ (निरमन्थत) उत्पन्न करता है, शुद्ध रूप को निकालता है (मूर्ध्नः) मस्तिष्क को धारण करने वाला (विश्वस्य) सबका (वाघतः) प्रकाश की तरफ ले जाता है।

नोट:- यह मन्त्र सामवेद 9 के समान है।

व्याख्या :- आध्यात्मिक यात्रा में ऊर्जा किस प्रकार हमारी सहायता करती है?

‘अधिदैविक’ :- परमात्मा, शुद्ध और दृढ़ आत्मा, ने अग्नि को पैदा किया है जो आकाश में सर्वोच्च ऊर्जा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य है। आप सभी मस्तिष्क धारण करने वालों को प्रकाश की तरफ लेकर चलते हो।

‘आध्यात्मिक’ :- इस बात की अनुभूति करने के बाद कि परमात्मा, शुद्ध और दृढ़ आत्मा, ने शुद्ध आत्माओं के हृदय आकाश में प्रकाश का सार उत्पन्न करके स्थापित किया है, सभी दिव्य मस्तिष्क परमात्मा के सर्वोच्च प्रकाश की तरफ अग्रसर होते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य पर ध्यान लगाने से प्रकाश और ऊर्जा के स्रोत की अनुभूति किस प्रकार होती है?

इस मन्त्र की दोनों व्याख्याएँ, दिव्य और आध्यात्मिक, हमें आकाश में या हमारे अपने हृदय स्थान में परमात्मा के सर्वोच्च प्रकाश की अनुभूति में सहायक होती है। परमात्मा ने ऊर्जा के सर्वोच्च स्रोत, सूर्य, को आकाश में स्थापित किया है। सूर्य का प्रकाश और उसकी ऊर्जा आकाश के माध्यम से यात्रा करती है और हमारे द्वारा प्राप्त की जाती है क्योंकि प्रकाश और ऊर्जा की गति का माध्यम आकाश है।

जब एक दिव्य मननशील मस्तिष्क अपनी व्यक्तिगत ऊर्जा के स्रोत को ढूँढ़ लेता है तो वह विचार-साधना के द्वारा सूर्य तक पहुँचता है और उसी सर्वोच्च ऊर्जा में वह परमात्मा के सर्वोच्च प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करता है। इस प्रकार सूर्य पर ध्यान लगाना भी प्रकाश और ऊर्जा की अनुभूति का एक मार्ग है।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 6.16.16

Rigveda 6.16.16

एहू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः ।  
एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥

(एहि) कृपया आओ (सु ब्रवाणि) उच्च शब्द (ते) आपके साथ (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (इत्थ इतरा) वैदिक और भौतिक (गिरः) वाणियाँ (एभिः) इनके साथ (वर्धास) प्रगति, महिमा (इन्दुभिः) शक्तिशाली (वाणियाँ, यज्ञ) ।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 7 के समान है ।

व्याख्या :-

हमें बोलने की शक्ति कौन देता है?

‘अग्ने’ अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! कृपया मेरी अनुभूति में आओ, वेद, सत्य और भौतिक ज्ञान के उच्च शब्दों को बोलने के लिए। इन शक्तिशाली वाणियों और यज्ञों के साथ ही हम प्रगति करते हैं और आपका महिमागान होता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपनी वाणियों को नियंत्रण में कैसे रखें?

नियंत्रित वाणी का क्या लाभ होता है?

परमात्मा की ऊर्जा हमारी वाणी शक्ति का बल है। इस शक्ति के साथ ही हम परमात्मा और उसकी सृष्टि के बारे में बोलते हैं। इसी चेतना के साथ हम अपनी वाणी शक्ति को झूठ बोलने और निरर्थक वार्तालाप से रोक सकते हैं। यह हमारी आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति की गति को तेज कर देगा। यह परमात्मा को भी हमारे माध्यम से महिमावान करेगा, क्योंकि एक दिव्य मननशील व्यक्ति ही अपनी वाणी पर नियंत्रण कर सकता है। आध्यात्मिक प्रगति में नियंत्रित वाणी अत्यन्त सहायक होती है। हमें समय-समय पर मौन व्रत अर्थात् न बोलने के व्रत धारण करने चाहिए।

सूक्ति :-

(गिरः एभिः वर्धास इन्दुभिः, ऋग्वेद मन्त्र 6.16.16, सामवेद मन्त्र 7)

इन शक्तिशाली वाणियों और यज्ञों के साथ ही हम प्रगति करते हैं और आपका महिमागान होता है।

ऋग्वेद मन्त्र 6.16.28

Rigveda 6.16.28

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्यत्रिणम् ।  
अग्निर्नो वनते रयिम् ॥

(अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (तिग्मेन) उग्र प्रकाश के साथ (शोचिषा) शुद्ध चमक (यासत् – नि यासत्) नियंत्रण, जला देता है, सुखा देता है (विश्वम्) सबको (नि – यासत् से पूर्व लगाया गया) (अत्रिणम्) शत्रुताएँ, डराने वाला शत्रु (अन्दर और बाहर) (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (नः) हमें (वनते) भोगते हैं (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा ।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 22 के समान है जिसमें केवल एक शब्द का परिवर्तन है। 'वनते' शब्द के स्थान पर सामवेद में 'वसते' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है अनुदान, वर्षा ।

व्याख्या :-

सभी शत्रुताओं को कौन नियंत्रित करता है?

हमें गौरवशाली सम्पदा कौन देता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य, अपने उग्र प्रकाश की शुद्ध चमक के साथ सभी शत्रुताओं और भय पैदा करने वाले शत्रुओं (आन्तरिक और बाह्य) को नियंत्रित करता है, जला देता है और सुखा देता है ।

वही अग्नि गौरवशाली सम्पदा का भी भोग करती है। वैज्ञानिक रूप से – ऊर्जा सभी कार्य उनके लिए करती है जो इसका संवर्द्धन करते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें गौरवशाली सम्पदा को प्राप्त करने और शत्रुताओं से इसकी रक्षा करने के लिए क्या करना चाहिए? एक बार जब हम अपने समस्त अहंकार और इच्छाओं का त्याग करके सबकुछ परमात्मा को समर्पित कर देते हैं, यह मानते हुए कि हमारे शरीर के माध्यम से सम्पन्न हुए सभी कार्यों का कर्ता केवल वही परमात्मा है और हम उसके प्रति प्रेम में मग्न रहते हैं, स्वाभाविक रूप से वह हमें दो आधारभूत लक्षण देता है :-

1. सभी शत्रुताओं और हर प्रकार के भय पैदा करने वाले शत्रुओं पर नियंत्रण ।
2. गौरवशाली सम्पदा का अनुदान और भोग जो केवल भौतिक सुविधाओं के रूप में ही नहीं अपितु ज्ञान और अनुभूति के रूप में होती है ।

इन सबके बावजूद, हमें यह कभी सोचना या अभिव्यक्त नहीं करना चाहिए कि हमने अपने प्रयास से किसी स्तर को प्राप्त किया है ।

सूक्ति :-

(अग्निः नि यासत् विश्वम् अत्रिणम्, ऋग्वेद मन्त्र 6.16.28, सामवेद मन्त्र 22)

अग्नि सभी शत्रुताओं और भय पैदा करने वाले शत्रुओं (आन्तरिक और बाह्य) को नियंत्रित करता है, जला देता है और सुखा देता है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





ऋग्वेद मन्त्र 6.16.34

Rigveda 6.16.34

अग्निर्वृत्राणि जनङ्घद् द्रविणस्युर्विपन्यया ।

समिद्धः शुक्र आहुतः ॥

(अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (वृत्राणि) मन की वृत्तियाँ, मेघ, सभी विपरीत परिस्थितियाँ (जनङ्घत्) विनाश करता है (द्रविणस्युः) समृद्धि की इच्छा करने वाला, चल सम्पदा का बल (विपन्यया) विशेष प्रशंसाएँ, पूजा, प्रयास (समिद्धः) जलने वाले पदार्थ (शुक्र) चमकते हुए (आहुतः) यज्ञ में त्याग के लिए आहुतियाँ ।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद मन्त्र 4 के समान है ।

व्याख्या :-

‘अग्नि’ समस्त विपरीत परिस्थितियों को किस प्रकार नष्ट कर देता है?

भौतिक अर्थात् अधिभौतिक अर्थ :- जो लोग समृद्धि, चल सम्पत्ति के बल की इच्छा रखते हैं उन्हें क्रियात्मक रूप से यज्ञ में चमकते हुए जलने वाले पदार्थों की आहुतियों और विशेष प्रयासों के साथ उसकी प्रशंसा और पूजा करनी चाहिए । उनके लिए अग्नि सभी विपरीत परिस्थितियों का नाश कर देती है ।

दिव्य अर्थात् अधिदैविक अर्थ :- जब लोग समृद्धि की इच्छा करते हैं तो वे परमात्मा की विशेष पूजा करते हैं और चमकते हुए जलने वाले पदार्थों जैसे – समिद्धा, जड़ी-बूटियाँ और शुद्ध घी के साथ यज्ञ करते हैं । ऐसे यज्ञों का अग्नि देवता बादलों को नष्ट करके उन्हें वर्षा में बदल देता है, खेतों को हर प्रकार की वनस्पतियाँ आदि उत्पन्न करने के योग्य बना देता है जिससे सब लोग समृद्धि को प्राप्त कर सकें ।

आध्यात्मिक अर्थ :- जो लोग आध्यात्मिक पथ पर समृद्धि की इच्छा रखते हैं अर्थात् परमात्मा की अनुभूति की इच्छा, वे उपासना यज्ञ, ज्ञान यज्ञ और कर्म यज्ञों के माध्यम से अपना समस्त जीवन एक चमकदार जलते हुए पदार्थ की तरह बिना किसी अहंकार और बिना किसी इच्छा के समर्पित करते हुए परमात्मा की विशेष पूजा और प्रशंसा करते हैं । परमात्मा ऐसे श्रद्धालुओं के मन की सभी वृत्तियों का नाश करके ऐसे दिव्य आत्माओं को अपनी निकतापूर्ण अनुभूति प्रदान करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

सम्पूर्ण सफलता के लिए कौन यज्ञ कर सकता है?

प्रत्येक सफलता के लिए एक अत्यन्त और गम्भीर श्रद्धालु के द्वारा सुन्दर यज्ञ की आवश्यकता होती है, जो सदैव दूसरों के कल्याण के लिए कुछ भी और सब कुछ त्याग करने के लिए तत्पर रहे । किसी वर्ग या संस्थान में केवल एक व्यक्ति, बिना अहंकार और इच्छाओं के, अपने जीवन को समर्पित करके समूचे संस्थान का कल्याण सुनिश्चित कर सकता है । परिवार में एक व्यक्ति अपने पूर्ण त्याग को प्रस्तुत करके

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



परिवार का कल्याण और एकता सुनिश्चित कर सकता है। एक महान् प्रधानमंत्री पूर्ण त्याग के स्तर पर समूचे राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित कर सकता है। एक राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ को करते हुए समूचे संसार का कल्याण सुनिश्चित कर सकता है।

**ऋग्वेद मन्त्र 6.16.43**

**Rigveda 6.16.43**

अग्ने युक्त्वा हि ये तवाऽश्वासो देव साधवः ।  
अरं वहन्ति मन्यवे ॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (युक्त्वाः) संयुक्त (हि) शीघ्र (ये) वे जो (तव) आपके (अश्वासः) प्राण, अश्व (देव) दिव्य (साधवः) प्रदान करने के लिए, प्राप्त करने के लिए (अरम्) अच्छी तरह जाना गया (वहन्ति) ले जाता है, यात्रा (मन्यवे) अपनी इच्छा के अनुसार।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 25 और 1383 में केवल एक शब्द के परिवर्तन के साथ आया है। इस मन्त्र में 'मन्यवे' के स्थान पर सामवेद 25 और 1383 में 'आशवा' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'आशवा' शब्द का अर्थ है गति के साथ, नाड़ियों के समान।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार अपनी दिव्यताएँ श्रद्धालुओं के साथ जोड़ देते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप अपने प्राण और अपने अश्वों को शीघ्र उन लोगों के साथ जोड़ देते हो जिन्हें दिव्य शक्तियाँ प्रदान करनी होती हैं। ये (प्राण और अश्व) वहन करते हैं (उन दिव्य शक्तियों को शरीर के सभी भागों के लिए), अपनी इच्छा के अनुसार सर्वत्र ले जाते हैं और फैला देते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक दिव्य श्रद्धालु अपनी दिव्यता अन्दर और बाहर किस प्रकार फैलाता है?

जब केवल परमात्मा को चाहने वाले दिव्य श्रद्धालु के जीवन में दिव्य ऊर्जा, परमात्मा स्थापित हो जाते हैं तो वे शीघ्र ही अपनी सभी दिव्य शक्तियाँ उस दिव्य श्रद्धालु के श्वास के साथ जोड़ देते हैं। इस प्रकार उसके शरीर के अन्दर, आंखों, श्वास और बोले गये शब्दों के माध्यम से दिव्यता बाहर के संसार में भी फैल जाती है।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



**This file is incomplete/under construction**